

# प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा

UNIT-1

(ECCE) (F - 3)

Written by - Saushabh Kumar

\* प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा : प्रमुख अवधारणाएँ =

प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा न ही और चारिकृत शिक्षा है और न ही गांधी पौष्टि आदाद कार्यक्रम है। यह इन समग्र विभिन्न की अवधारणा है। वृद्धि जिसमें कच्चों की उत्तम जीविका वृद्धि और उसके सर्वोत्तम विकास की आवश्यकता ही है। यह उत्तम उपर्युक्त औपचारिक व्यवस्थाओं का निर्धारण कर सुनिश्चित करना है। इसके अंतर्गत कच्चे का गांधीवस्था में विकास घनमति के बाहे नीन के तक हेष्वरेण के साथ अनीपचारिक शिक्षा की व्यवस्था तथा ८ से ४ वर्ष तक यानि कहा १ से २ वर्ष तक पूर्व प्राथमिक शिक्षा की प्रवृत्तियों का विस्तार इवं प्राथमिक शिक्षा से पुढ़ाव है इस अवधारणा में हेष्वभाल पौष्टि स्वास्थ्य शिक्षा सभी का समावेश सुनिश्चित किया जाना आवश्यक है।

प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल ८१ शिक्षा की अवधारणा सर्वप्रथम राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 में उम्र के आई। इससे पूर्व

Montes azay kinder garten natur, play school आदि नामा से चल रहे कार्यक्रम (ECCE) की समग्र अवधारणा से पूरे कैवल शिक्षा के पहले पूर्व जोड़ देते आए हैं। विधालय पूर्व शिक्षा से अनिष्टाय हैं औपचारिक शिक्षा।

ECCE के समग्र अवधारणा के साथ ICDS 1975 से बाल विकास के लिए निरंतर प्रयासरत है परंतु पहुँच और शुणवन्ता के भीतर में अभी बहुत कुछ उत्तर दिये जाने द्वारा आवश्यक है। विधालय पूर्व शिक्षा के शुणवन्ता में वृद्धि के लिए नवीनीकरण की आवश्यकता है जोड़ि शिक्षा का विकास तेज गति से होने वाली है। निरंतर है विकास का पहला चरण उसके कठिन विकास के पहले प्रवाहित करना है। स्वास्थ्य इत्यादि सुविद्याएँ और वैचित्र मनोसमाजिक परिवेश कुच्चे की सिखने एवं विकास की आवश्यकता पूरी करने के लिए अनुकूल

वातावरण, बनाते हैं। यह इसी वातावरण का निर्माण जैहो वज्रों को सुनने गौलने तथा अभिवाकित का मोका मिलता है।

\* ECCE की आवश्यकता क्यों उकेरय है?

ECCE योग्यता पूर्व प्राधिक बाल्यावस्था के विवारित्यों के देखभाल एवं शिक्षा के सुनिश्चय है। प्राधिक बाल्यावस्था के बच्चे इस ECCE Scheme के तहत उनका शिक्षण दिया जाता है। जिनका उम्र ३ वर्ष से छाड़ा है तक ५½ वर्ष तक है।

ECCE की आवश्यकता:-

(१) दिल्ली राजधानी में यह ऑफिस के आग्राहित किया गया विषयमें ECCE की शिक्षा के मुख्य कुनै पर लाने का नियमित चर्चा हो तथा सरकार की इस पर आवश्यक उपकरण तैयार करने का सुझाव दिया गया। यह स्थापित करता है कि वज्रों का मस्तिष्क में प्रथम छह वर्षों में अद्भुत सीखने की शक्ति होती है।

(२) बाल उन्नित उपायों, जिनमें शामिल हैं, विद्या, खेल-खेल में शिक्षा तथा आनन्दमय शिक्षा के परिपूर्ण में गारंब्रिक बाल्यावस्था शिक्षा के मध्यम उसे की जरूरत है।

(३) ECCE का विकित वह है तथा यह मानविय समाज का एकीकृत कार्य है जिसका विभार कर द्वारा आनेवाली पीढ़ी के समृद्ध किया जा सकता है।

(४) ECCE कार्यक्रम के मुख्यतः निवृत्ति विकास के लिए आवश्यक है। प्राधिक शिक्षा के साथ आग्राहितरण के द्वारा से गी उपर्युक्त आवश्यक है।

(५) यह वज्रों के स्वास्थ्य एवं शोषण के प्राप्ति आवश्यकता पर जोर दीता है।

(६) पत्नीय वज्रों अधिकारीय है तथा उसमें क्षयविकार विभागन है। अतः ECCE आवश्यक है।

# ECCE - Early Childhood Care and Education

## ECCE के उद्देश्य :-

- (१) पहले प्राचीनिक वाल्यावस्था के विद्यार्थियों का शारीरिक और मानसिक विकास करना।
- (२) खलीड़ी से पोशाक पहनना।
- (३) शौचालय सम्बन्धी आहतें।
- (४) समग्र पहले नियमित रूप से शोधन करना।
- (५) सापु, छप्पन एवं रुद्धि रखना।
- (६) सीखों के बारे के अनुभव को मास-पिग, भिट्ठो, शिष्टाचारों, तथा समूह के क्रीय और उठाना।
- (७) सामाजिक तरीके, फैग, आहते तथा अवधारणा और को सीखना।
- (८) आत्म - अग्रिमता को सीखना एवं प्रोत्साहित करना।
- (९) सुन्दरीयों से संवेदित व्यवहार के सैडल्यनाओं को प्रभावरात्रि, दृग्दश एवं खेल - खेल में बताना।
- (१०) उनमें शारीरिक, सामाजिक, आर्थिक, प्राकृतिकों और विभिन्न आशामों तथा वातिविधियों को समझ, विकसित करना।
- (११) नये - नये शब्दों से बुत्यायी से परिचित करना।
- (१२) सही एवं ग़ूलते उस समझ को विकसित करना।
- (१३) विद्यालय के प्रति व्यवहार का शब्द विकसित करना।
- (१४) सूखनुशीलता एवं शात्वनिर्गता को और बच्चों को बढ़ाना।
- (१५) वाह - विवाह एवं वर्तीलाभ सम्बन्धी वातिविधि और बच्चों को जाग्रत करना।
- (१६) बच्चों ने अपने सामाजिक दृष्टिकोण का विकास करना ताकि वे खेल तथा दृश्य सामाजिक वातिविधियों में जन से जाग लें।
- (१७) सौन्दर्य सम्बन्धी गावों को जाग्रत करना।
- (१८) दूरेड़ बच्चों को महर करना ताकि वे अपनी आहटों का स्वागत कर सकें।
- (१९) बच्चों के लिए तुम्हारे हिसाब से उत्पन्न का सूचना उठाना, कौशलों से परिचित करना।

\* प्रारंभिक वर्षों के दौरान गुणवत्तापूर्ण प्रारंभिक बाल्यावस्था देखमाल शिक्षा का बच्चे के विकास रूप जीवन पर प्रभाव

बचपन के पहले आठ साल बहुत महत्वपूर्ण होते हैं, इसके पहले तीन साल अब समय भविष्य के विषय, बढ़ना और विकास की उनियाद होती है।

इसके किसी भी समय के मुकाबले इस दौरान बच्चे तजी से सीखते हैं। इस उम्र में बच्चों पर

इचान देना अतिआवश्यक होता है क्योंकि इसका प्रभाव जीवन में होता है जून-आठी सालों में

देखमाल और इचान बच्चों को पालने - पूलने में मदद करता है। बच्चों को गोद लेना, घासना,

बातें करना उनकी बढ़त की उकसात होतड़का हो गए की, वीनों की ही सक जैसी शारीरिक

मावनात्मक, मानसिक और सामाजिक जरूरतें होती हैं। सीखने की क्षमता दोनों में बराबर होती है। दुलार, इचान और बढ़ावे की जरूरत दोनों को

होती है। साथ ही इ-हें संतुलित आहार की आवश्यकता होता है ऐसे पारवेश में पल-बढ़े

बच्चे की मानसिकता सक्रान्तमक होती है। प्रायः

ऐसा देखा गया है कि बच्चे का बचपन जिस तरह के परिवेश में हुआ है। उनकी मानसिकता वैसी ही बन जाती है। प्रारंभिक वर्षों के दौरान

गुणवत्तापूर्ण प्रारंभिक बाल्यावस्था देखमाल शिक्षा बच्चों के विकास का आधार होता है। यह

लक दिशा के रूप में कार्य करता है। इसका परिवेश में पल-पढ़ कर बच्चे का विकास

विकास होता है। जिससे वे आगे चलकर अटका करता है।

\* एक संतुलित तथा संर्वभायुक्त हसीसीही पाठ्यर्थो को समझने के

→ वर्चों के जीवन के पृष्ठभाषणवर्ग मानव जीवन का विकास के मुख्य समग्र है जिसमें जीवन के विकास का सर्वाधिक रैपी से उगार देता है। इन वर्षों में मानव मासिकता का तेजी से विकास देता है। ECCE ने वर्चों के विकास में काफी सराहनीय योगदान दिया है। वर्चों का समग्र एवं सर्वांगीण विकास ही सके। ECCE के अन्तर्गत पाठ्यर्थों में वर्चों के समग्र विकास हेतु निम्न रचयों पर धोड़ दिया है।

(1.) शारीरिक तथा ग्रामक विकास → ग्रामक की शल, मुख्य विशेषज्ञों का समन्वय, आँख एवं हाथ का समन्वय, संतुलन का इन, शारीरिक समन्वय, स्पैश एवं शिक्षा की ज्ञानांकना, वाष्णव, स्वास्थ्य, स्थानि

(2.) माध्यमिक विकास → सुनना, शब्दना, एवं वार्तालाप का कोशल, शूल्क भएडार, अस्तरों एवं शब्दों के उच्चारण, अुपर्युक्ती की पहचान, शब्दों एवं वाक्यों का निर्माण प्रारंभिक लैखन, विष्यालय में गाढ़ा का परिचय।

(3.) सज्जानात्मक अधिकार मानसिक विकास → उड़ी संकल्पमाओं का विकास थंगा छी-हुँख्या तथा सरख्या गिनती, सामाजिक समन्वय, समूह वार्तालाप इत्यादि।

(4.) सामाजिक - क्रियात्मक तथा संवेदात्मक विकास तथा स्वर्य से संविधित संकल्पना का विकास, आदातों का निर्माण, उत्सुकता, सद्योग, सामाजिक समन्वय, Pro-Social behaviour अपने अनुभवों की शोधर उसना।

(5.) ज्ञानेन्द्रियों विकास → पाँचों ज्ञानेन्द्रियों का विकास

(6) सूखमशीलता तथा सौन्दर्य कोष्ठे विभिन्न क्लाऊं का व्यौध, नृत्य, नाटक तथा संगीत ज्ञानविद्याओं का ज्ञान

(7) ECCE एक संतुलित कार्यक्रम है जिसमें शोधागत, संवेदात्मक, सूखमशील, सौन्दर्य आदातों का विकासीयों पर धोर दिया जाता है। यह सिर्फ यह बाल के लिए कार्यक्रम है जो प्रत्येक वर्चों के

आधिगम सुन् सांविडि के परारतों की पूरा करती है। इसके लिए विभिन्न तरह की रौचक सुन् आवश्यकीय वार्ता विकल्पों आयोजित करती है। यह सिफ आप-चारिकु केन्द्रीकृत शिष्टाचल के लिए कार्यक्रम वा संप्रोच नहीं है, यह कार्यक्रम वर्षों लिखने, पढ़ने सुन् वापिसीय गणनाओं के लिए तैयार करती है। ECCE कार्यक्रम वर्षों के समय विकास की सुनिकितता करती है, यह वर्षों के पर्याप्त इच्छामाल, पाठ्यण पर फैक्स करती है।

\* ECCE पाठ्यचयन के लिए है विकासालिक उद्देश्य तथा मियोडन :-

⇒ ECCE पाठ्यचयन के लिए उद्देश्य -  
 (1) एवस्थ आकृत डालना - वर्षे में अचूकी आवश्यक डालना और व्यक्तिगत अनुकूलन के लिए घरेली सुनियादी धीर्घता पढ़ा करना।

(2) वांकनीय सामाजिक अभिवृत्तियों का विकास - वांकनीय सामाजिक अभिवृत्तियों और शिष्टाचार विकसित करना। तथा स्वस्थ सामूहिक भागीदारी की प्रोत्साहित करना।

(3) अनुश्रूतियों और संवेदों के विकास के लिए मार्ग देशन - वर्षे की अपनी अनुश्रूतियों और संवेदों की अभिव्यक्त करने, समसन मार्ग देशन और वियक्ति करने में मार्गदर्शन करने संवेदों के मामले में हासिता की विकसित करना।

(4) सौन्दर्य - बोध → सौन्दर्य बोध की विवाहा।

(5) आपस की सुनिया समसन में सहाय करना - परिकेश के बारे में बाहुक विज्ञासा की शुरुआत की पुरातत करना।

(6) अंत्य अभिव्यक्ति की विव्याहन वर्षे की आवश्यकता के लिए अवसर हृत्तर स्वतंत्रता और स्वभवत्वान्वयन के लिए प्रोत्साहित हो।

## ट्रॉफी कालिक उद्देश्य :-

- (1.) बच्चों के समग्र विकास का उन्नयन करना।
- (2.) बच्चों का ओपचारिक स्कूल के लिए तैयार करना।
- (3.) प्राथमिक शिक्षा के सर्वव्यापीकरण के लिए योगदान होना।
- (4.) प्राथमिक शिक्षा, के अवरोधों को कम करना।
- (5.) विभिन्न विकल्पों के साथ pre schooling पर धौर होना।
- (6.) विभिन्न विकल्पों के साथ ECCE के विभिन्न Degree पर होना विषयसे ज्ञान - से - ज्ञान लोग लाभान्वित हो सके।
- (7.) संविद्यान के अनुच्छेद 45 के अन्तर्गत मासिक विभिन्न राज्यों के ECCE के लिए व्यापक खेल कुशलता करने के लिए धौर होना।
- (8.) सर्वशिक्षा अभियान के तहत इन से 73860 लक्ष के नियों का उन्नयन करना।

- (9.) छह वर्ष के लिए बच्चों के प्रकृत कोण पौष्टि की व्यवस्था।
- (10.) समय - समय पर बच्चों के स्वस्थ वरीषण।
- (11.) इन बच्चों के ट्रॉफी की सुविधा।
- (12.) Pre School and Primary School को जोड़ने का काम।

- (13.) विभिन्न रहस्यों के लिए जानिविद्यों के जारीनय पर धौर करना इनकी कठोरी करना एवं सुनना, अवित्त पाठ, गाना गान, रंग एवं आमारों की सौंध, समृद्ध गुणों नाम, अच्छी और झोलों का निर्माण।

\* गतिविधियों के आयोजन के लिए विभिन्न विधियाँ प्रक्रियाओं का बोधः →

→ राष्ट्रीय नीति 1986 में इस स्पष्ट रूप से कहा है कि पूर्ण प्राथमिक उद्योगों के लिए ऐसा कार्यक्रम बनाना चाहिए जो उनकी मूलभूत आवश्यक अनुसार वे एक जिससे उनमें सर्वोत्तम विकास हो सके। अच्छापूर्क तो होड़ भी गतिविधियों के बोध से परते रहने वालों का द्यान रखना चाहिए।

(1) पूर्ण प्राथमिक सूक्ष्म कार्यक्रम बनाने समय इस बात का विशेष ध्यान रखा जाना चाहिए कि वह कार्यक्रम बोलकों की उम्र, मानसिक स्तर एवं आवश्यक अनुरूप हो।

(2) बोलकों को हीरी त्रियाएँ आवश्यक तथा जो चाहिए जिनमें वह अपने घोट-घोट कार्य स्वरूप करने के लिए अवधिस्त हो।

(3) यौवन त्रियाएँ अर्थपूर्ण होने चाहिए। कार्यक्रम द्वारा आयोजन करने समय इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि जो भी यौवन कियाएँ आयोजित की जायें, वह अर्थपूर्ण हो।

(4) विषयों में सहस्रमय लोना चाहिए और अतिरिक्त विषयों का व्यवहार कार्यक्रम नियोजन के अन्तर्गत पढ़ाये जाने के लिए त्रिया गया वा जोगे आपस में सहस्रमय हो।

(5) धोपना एवं जीवन के व्यवहारिक जीवन पर आधारित होना चाहिए। आविष्यक अनुभव हेतु विषयपत्र द्वारा व्यवहार के बोलकों की दैनिक जीवन की आवश्यकता है एवं आधारित हो।

(6) अधिगम, छाड़ि छविकर वा तरीके वह प्रभावकारी हो सकता है।

(7) बोलकों में अच्छविश्वास ने पन्थे अपित सत् के प्रति निष्ठा एवं कार्य के प्रति कृषाणिक दृष्टिकोण का विकास हो।

(8) कार्यक्रम नियोजन में लंबीलापन वोना चाहिए इमारी सामाजिक व्यवस्था वा आखपास के वारावण में आए परिवर्तनों को इस कार्यक्रम में भी परिवर्तन जा सके।

कार्योंम् नियोजन करते समग्र चक्रि छा उपरोक्त  
 नियमों का पालन करते वह कार्यक्रम बालकों  
 के सर्वोत्तम विकास में सहायता होगा। साधु-साध  
 कुछ नियमों का पालन आवश्यक है जिससे वह  
 क्रियाएँ अव्याप्त हो उक्तम् इष्ट वालक के  
 सुरक्षित विकास हो प्राप्ति में सहायता सिद्ध हो  
 दी जाए। शान्त रूप व्यवहार द्वारा प्रकार की क्रियाओं  
 की उचित समय के स्थान पर कार्यक्रम में  
 शामिल किया जाना चाहिए जिससे बालक  
 जब व्यवहार के भागों प्राप्त धूत वाये तो  
 शान्ति क्रियाओं में आराम हो जान प्राप्त हो  
 जाए। इसलिए शिक्षा परिक्षण ताकार्यक्रम  
 नियोजन में विशिष्ट स्थान किया जाना चाहिए।  
 इससे बालकों में सामाजिक गुणों की विकास  
 होता है।

\* क्षामा में विकासोनुकूल बाल कुन्दित तथा सामाजिक  
 वातावरण निर्माण ⇒  
 ⇒ क्षामा की विकासोनुकूल बाल कुन्दित तथा सामाजिक  
 वातावरण निर्माण के कुछ मुख्य प्रबोधन हैं।  
 (1) विशेष कृष्णार्थ → यही क्षामा की तथा विषयों  
 में जब बालकों का दृश्यारूप अधिक होती है तब  
 उन्हें सामाजिक बालकों के सापे घड़ाना लाभपूर्ण नहीं है  
 सकता है। बल्कि निरन्तर असफलता से बालक  
 मनोविज्ञानिक होना के लिए हुआ जाता है। इससे  
 पहले की क्षामा में लगातार कठोर हुआ जाता है।  
 इसके क्षामा की व्यवस्था सामाजिक विधानों में कई  
 भावनी चाहिए।

(2) विशेष विवातय → ऐसे प्रदेशों बालकों को होने वाले  
 रुक्ष घात हो जो विशेष बालक के रूप में आते  
 हैं। इन घोटे के लिए एक विशेष विवातय की  
 व्यवस्था करना ही न्यायीता रखता है, क्योंकि  
 उनकी आहमता इस स्तर की होती है ताकि वे सामाजिक  
 रूप से प्रयोग जैसे आनंद बाली विभिन्न सामग्री  
 के द्वारा विशिष्ट नहीं हों जिसे उन्होंना खो देते हैं।  
 मनसिक्त चलता है आरीरिक विकलांगता वाले बालकों

के लिए पूर्वक - पूर्वक विवाह का होता है। विविध भाषा वाले बालकों की जिन्हें शिक्षित नहीं किया जा सकता है। इसी बालकों की व्यवसायों का प्रशिक्षण किया जाता है। यिससे वे समाज का बोझ न बना।

(3.) विविध पाठ्यक्रम का सामान्य रूप से पाठ्यक्रम का निर्माण औसत उम्र का वाले बालकों की आवश्यकता की दृष्टिकोण से होता है। इसे किया जाता है। पिछले बालक पाठ्यक्रम की कुछालतपूर्ण अनें में असफल रहते हैं। अतः उनके लिए स्थल एवं विषयों के अनुरूप ही, निर्धारण करना अप्रोप्री रहता है।

(4.) शिक्षण विधियों के इन शिक्षण के विधियों में पर्याप्त परिमाण की आवश्यकता होती है। इन्हे स्थल सामग्री और प्रत्येक अनुभवों की सद्यता, लैंडर तथा विषय - वस्तु की धोटी - धोटी इकाइयों में बांटकर स्थल तरीके से पढ़ाया जाना चाहिए। सांबोंगिक अच्छा अच्छा छरणों से पिछले जाने वाले बालकों के लिए अभिनय, प्रौज्ञाता विधि, अंगूल विधि आदि नवीन शिक्षण, विधियों का प्रयोग इस उपचारात्मक शिक्षण में विशेष महत्व रखता है।

(5.) विशेष अध्यापक —

(6.) पाठ्यान्तर, उपर्युक्त, विविध अनुभव तथा कठीन पाठ्यक्रम

(7.) समय सारणी

(8.) परीक्षा योगाल

UNIT - 3

\* प्राचीन विद्यालयों में प्रारंभिक बाल्यावस्था के बगाल और शिष्टा के विस्तार का अर्थ एवं आधारः -

बाल्यावस्था के प्रारंभिक वर्षों में बच्चों के बोहिड़ु स्तर व्यक्तित्व में दैर्घ्य से विकास होता है। जीवन के आरंभिक छह वर्ष विकास निर्णायित अवधि हैं, विकास तीव्र गति से ही रघु होता है। अः पर्याप्त गोपन स्वास्थ्य, इखमास आदि अनुकूल विधियाँ विकास की प्रोत्साहित करती हैं तथा प्रतिकूल अनुश्रव विकास में बाधा डालते हैं। बच्चे का विकास शुरू अवस्था से ही आरम्भ के बातों हैं। शुरू अवस्था में बृहि तीव्र गति से धीरी हैं, जन्म से लेकर छह वर्ष तक की अवस्था में बृहि की गति तीव्र धीरी है।

(1) गमावस्था से जन्म तक

(2) जन्म से काई कर्प तक

(3) काई कर्प तक की शिष्टा

(4) चार वर्ष से अः कष्ठ की शिष्टा

पहली बाल्यावस्था में माता और बालक होनी के लिए महत्वपूर्ण शिष्टा काल है। अतः माता और बच्चे के स्वास्थ्य और स्वच्छता पर जल्द दिया जाना है। इसकी दूसरी अवस्था में दौरान पूर्व सूत का कार्य बच्चों की दैनिक और साधारण जीवन की विधियाँ में लगाये रखना है। जिससे उनका समर्पित विकास हो सके।

पूर्व बाल्यावस्था के बगाल एवं शिष्टा की समन्वयक पट्टिं दीने के कारण यह बच्चे के सम्पूर्ण विकास पर बल देती है। इसके मुख्य तत्व स्वास्थ्य है जो बगाल एवं पौष्टि के साथ-साथ खेल-पट्टि खेल उपकरण एवं सौंसै अधिगम अनुभवों का बढ़ावा देती है। जो उस बगाल के शास्त्रिक ग्रन्थात्मक, क्रामालिका, जीवनात्मक तथा दोनों नुस्खियों के विकास को बढ़ाती है।

पूर्व प्राचीन इन्द्रिय शक्ति ये दैसा इन्द्रिय हैं जिसमें ८०८ एं कम जाग्रु के बच्चे शिष्टा पाते हैं। इसका मुख्य उद्देश्य है - शिष्टा की स्वास्थ्य, सुर्खेत तथा

दृष्टा परिष्कृत वातावरण में रखकर उनका शारीरिक विकास, सामाजिक आनन्द और अभिव्यक्ति प्रशिक्षण को उन्नत करना है।

जबकि स्कूल एवं प्रकार से (वर्ष) के साथ ही यहाँ वह अपनी स्वनात्मक प्रवृत्तियों को अधिगच्छ कर लिए विशेष रूप से बनाया गया वातावरण प्राप्त करता है। पूर्व प्राधानिक शिल्प की स्थान ही इसमें बालक तथा उन्हें - युवाओं की व्यवस्था की जाती है। शहरी होते हैं मौनटेसरी स्कूल भी हैं। व्यापी छोटे हैं। इन्हें बालकाड़ी कहते हैं। पूर्व - प्राधानिक शिल्प की महत्व पर बढ़ाया जाता है। हुए बाताया ही पूर्व - प्राधानिक शिल्प विशेषकर ऐसे बच्चों के बारीर मानसिक और मानवनात्मक विकास के लिए बहुत आवश्यक है। जिनके बारे का वातावरण बहुत आपराधिक अपने वर्तमान विकास के लिए कृतिहृषि ही पूर्व प्राधानिक शिल्प के विकास का आभासन करना है। इस विकास की आवश्यकता निम्न प्रकार है-

- (1) अधिकारी व्यायों में शिल्प वातावरण की अभाव
- (2) बालक तथा शारीरिक विकास की आवश्यकता
- (3) पूर्व - प्राधानिक शिल्प का प्राधानिक शिल्प पर ध्याव
- (4) संयुक्त परिवार प्रथा के अभाव की दृष्टि
- (5) संयुक्त परिवार प्रथा के अभाव की दृष्टि
- (6) वर्तमान शिल्प में अवैज्ञानिक
- (7) वर्तमान अर्थव्यवस्था का स्थिरों का काम घरेलू इस शिल्प का उक्तिश्वर वर्णन की आवश्यकता है। इसमें वह अपना शारीरिक और मानसिक विकास कर सके। हवाएँ प्रवर्तित किया जाएगा जो भावात्मक विकास होता है। इसके बच्चे के मन में कानून के प्रति भावर और प्रमाण बनता है। इसके बायीं को खेल कर समझता है और यहने में कानून करता है।

\* प्रारंभिक वर्षों में पुस्तिगाथों के बाल कैनिंग होने गा  
अर्थ :-

बाल कैनिंग शिल्प का मतलब है कि पाठ्यक्रम  
शिल्प, विद्या, शिल्पण तकनीक आदि सभी बालक  
की स्वास्थ्यविकास विधान का अध्ययन करने वालक  
की आपृथक्काओं, वैज्ञानिकों, अधिकारियों तथा  
कवियों के अनुसार हो। बाल कैनिंग पाठ्यक्रम के  
बालक का कुछ, संकेत, शरीर और सामाजिक  
दृष्टि सिद्धास्थी सम्भावना रहती है।  
भारत में गांधी जी ने तथा ऐंगोर ने बाल-  
कैनिंग पाठ्यक्रम के विचारणा के फल से पुस्तक  
उत्पादन।

गांधी जी ने बाल-कैनिंग पाठ्यक्रम निर्माण  
के लिए बालक के लिए प्रतार के विवरण पर बल  
दिया है, और उसे कि बालक की सारी शिक्षा निम्न  
विवरण पर आधारित है -

(1) बालक के शिक्षण विवरण पर आधारित पाठ्यक्रम

(2) बालक के सामाजिक विवरण पर आधारित पाठ्यक्रम -  
बाल कैनिंग प्रणाली के अन्तर्गत सहल का  
व्यवस्था रूप है दिया जाता है और क्षाय  
प्रयोगशालाओं का रूप विवरण कर लिया है, जिसमें बच्चों  
को कुछ कार्य के लिये जाते हैं और उन्हें एक  
निश्चय समय में छोड़ कर देते हैं। विद्यारथों  
सहित अपने सीखने की श्रद्धा के अनुसार सीखने  
का अवसर प्रदान किया जाता है, बालक कैनिंग शिल्प  
प्रणाली में बालकों को प्रोत्तेक्ष्ण दिये जाते हैं,  
जो बहुत बार प्रतार के लिये हैं।

(3) उत्पादक प्रौद्योगिकी 2.) उपग्राहकों प्रौद्योगिकी

(4) समस्यात्मक Project (5) अध्यात्म Project.  
कई बालक निम्नकर इस Project पर जुटते हैं  
होते हैं और इस प्रतार सीखना, व्याख्यापन और पता  
तथा रुचि एवं नियंत्रण करते हैं। परियोजना का  
रूप स्वयं बदलते हैं, अध्यापक इस गार्डुरीकृत तथा  
प्रामाणिकता का रूप छिपाते हैं। पाठ्यक्रम से पुरण,

प्रयत्नशीलता, रचनात्मक सक्षियता, उत्तरदायित्व सहकारीता तथा सहस्रानुग्राहीति गुणों का विकास होता है।

परिपेक्षना के उद्दारण - (i) खेल में सहकारीता अपडाए खेलना

- (2) खेल के
- (3) ग्राम सर्वेषण
- (4) प्रयत्नी मनान
- (5) शौक्षण्यित परिभ्रमण

\* प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा में खेल के गतिविधियों के आधारित का महत्व

बालक के विकास की प्रक्रिया में खेल का अत्यधिक महत्व है। आज के समाज में कोई भी व्यक्ति इससे बनकार नहीं कर सकते ही। खेल से बच्चों में अनेक शारीरिक, सामाजिक, मानसिक तथा नीतिक गुणों का विकास होता है। शिक्षा के क्षेत्र में खेल को एक प्रणाली खेल प्रणाली के रूप में विकास गया है। खेल का महत्व निम्न कारणों से बहुत अधिक समझा गया है—

i) शारीरिक विकास — विभिन्न अंगों के विकास के लिए अधिक से अधिक कृत्यात्मक खेल खेलना अति आवश्यक होता है। पूर्व-बाल्यावस्था में कृत्यात्मक खेल ही पसंद किया जाता है जैसे — कूदना, माँगना, सीढ़ी-चढ़ना, इत्यादि। खेल से विभिन्न अंगों की मांसपेशियों का विकास होता है।

ii) मानसिक विकास — खेल बालकों के प्रत्यक्षीकरण, कल्पना, चिंतन, तकनीकीति, उत्तिष्ठान, आदि मानसिक ग्रोथताओं के विकास में सहायता किसी दूष होते हैं। घर के अंदर या बाहर खेले जाने वाले सभी खेल बालकों की इन ग्रोथताओं

के विकास में कुद न कुद मात्रा में सहायता होती है।  
जैसी - शतरंज, विवज आदि

iii) सामाजिक विकास - खेल द्वारा बच्चे एक दूसरे के संपर्क में आते हैं, जिससे उनका समाजोकरण होता है। खेल के दौरान सामाजिक मूल्यों सहानुभूति सहनशीलता की मानवना को प्राप्त हो सकती है। दूसरे की मदद करने की मानवना जाग्रृत होती है।

iv) सृष्टिनामकता का विकास - खेल के दौरान बच्चे अपने नए - नए विचारों का प्रयोग करते हैं। नए - नए तरीके खोजकर खेलने से खेलते हैं। खेलने की अलग - अलग तरीकों से प्रयोग करते हैं। जिससे उनमें कुछ नया करने का क्षमता का विकास होता है।

v) चिकित्सक मूल्य - कई बार बालकों की अनेकों तनाव हो जाता है, जो बालकों के लिए हानिकारक होता है। खेल के माध्यम से तनाव कम होता है। बच्चे अपने दोस्तों के साथ खेलते समय सुशुभ्रता करते हैं।

vi) शिक्षा में महत्व - बच्चों की शुरुआती वर्षाय में खेल के माध्यम से ही किन्हें जाता है। किंडरगार्टन यूव मौटेसरी प्रणाली में बच्चों को खेल - खेल द्वारा शिक्षा दी जाती है।

vii) अभियांत्रिकीय कौशल का विकास - खेल के दौरान बच्चे आपस में बात करते हैं। जिससे उनका बोलने का क्षितिक घर्ता होता है। और दौरे - दौरे वो अपने मान की बात वरपर तरीके से बोलना प्रौद्योगिक जाते हैं।

viii) नोटर्ट्व का क्षमता

ix) नीतिक विकास

x) संवर्गान्वयक विकास

\* विद्यालय आने से पहले बच्चों की मापा तगा  
गणितीय कौशल

विद्यालय आने से पहले बच्चों की मापा तगा  
गणितीय कौशल का विकास तुका होता है। इसका  
स्तर उनके उम्र के हिसाब से रहता है। विद्यालय  
आने से पूर्व बच्चों को समाजित मातृभाषा  
का ज्ञान होता है जो वो अपने माता-पिता,  
घर-परिवार, आस-पड़ोस, दौस्त-साथीयों या  
परिवेश से सीखते हैं। यहाँ पर मातृभाषा का  
अच्छी स्थानीय भाषा से ही बच्चे घर पर  
सभी से स्थानीय भाषा में बात करते हैं।  
अपने दौस्तों को अपने बारे में बताने के लिए  
भाषा का प्रयोग करते हैं। खेल के दौस्त  
खेल का नियम बताने के लिए भी भाषा  
का प्रयोग करते हैं। दादा-दादी द्वारा सुनी हुई  
कहानियों के अपने भाषा में अपने दौस्तों  
को सुनाते हैं। इन सभी क्रियाओं से उनका  
भाषाई कौशल का विकास हो जाता है।

गणितीय कौशल का उन्हें कुछ आस  
समझ नहीं होता है। लेकिन उन्हें, ज्यादा-  
कम, दोटा-बड़ा, पहला-मूला का ज्ञान  
होता है। उन्हें गणिती सही से नहीं आता  
है किंतु रुक्की की दौ बिस्कूट और  
दुसरे की पांच बिस्कूट देने पर वो समझ  
जाते हैं कि किसी कम और किसी ज्यादा  
बिस्कूट नहीं है।

विद्यालय में बच्चों के इस ज्ञान को  
आधार मानकर उन्हें शिक्षा दी जाती है।  
जिससे बच्चे आसानी से समझ पाते हैं  
और शिक्षक के लिए आसान होता है। इस  
तरह से बच्चों को समझाना।

\* प्रारंभिक वर्षों में विकास के नियन्त्रण आयाम इसे अधिकारः-

इ) प्रारंभिक वर्षों में विकास के सभी वर्षों के व्यापकता का सर्वांगीण विकास के नियन्त्रण आयाम है।

(ii) शारीरिक विकास के अविहृत तुलना शारीरिक विकास में उसके शारीरिक बाधा एवं आन्तरिक अवश्यकों का विकास सामिल थोटा है। केवल उनका लम्बाई और विशाल काय थोटा नहीं।

(iii) वृहि लम्ब (Growth System)- शारीरिक तुलना अंग नियन्त्रण गति से वृहि से गति करते हैं। जूँची तेजी से गति करते हैं और उन्हीं दोनों पहले वर्षों का भार तेजी से बढ़ता है और कहीं भी तेजी से बढ़ता है। प्रथम 6 वर्ष मधीन में शारीर में आनुपातिक परिवर्तन नहीं कियाजूँ पड़ता है, परन्तु प्रथम 9 वर्ष के अन्त तक तेजी गति से परिवर्तन होते हैं।

(iv) शारीरिक आकार में परिवर्तन- शारीरिक आकार में परिवर्तन मुख्यतः शारीर में छह और भारी तुलना करणा थोटा है। इसके वर्ष तुलना का तुद उसके घन्मठाल से 50%. अधिक दो घन्मठा हैं और दो वर्ष तक 75%. अधिक दो घन्मठा हैं आरंभिक और मध्य आल में वृहि उम दो जाती हैं।

(v) शारीर में आनुपातिक परिवर्तन- घन्म तुलना अवधि में पहले सेर विकसित थोटा है। तत्परत्यात् शारीर में नियन्त्रण आज निर्भीत थोटा है। वीवाकाल में सेर छोटी तेजी से बढ़ता है, रोशन एवं भव्यावस्था में लड़के रूप लड़कियों का शारीरिक अनुषष्ठा शमाल थोटा है।

(vi) शारीरिक गठन में परिवर्तन- शारीर में वसा घन्म से से तुक लघाट पहले बढ़ने लगता है और घन्म के बाद जीव बढ़ती रहती है। किंवद्वारा में वसा अंडा शारीरिक तापमान द्वितीय रूपता है। 19 वर्ष की आयु में यह अधिकतम थोटा है। घन्म घन्म के समय लड़कियों में लड़कों से अधिक वसा थोटी है।

(v.) दौतों का विकास का बालक का पहला होते होने का -  
उसे माह की वय में निकलता है। उसे माह तक  
इक बालक के सामने के बारे दौते आजाते हैं।  
(vi.) मरित्यका उपरिकास → नाड़ी व्यस्थान एवं विकास  
गमे ऊलीन अवस्था से ही तीव्र गति से चलता  
है। घुसा के 3-4 माह तक ही इसी गति से चलता  
रहता है। लगभग 2 वर्ष की अवस्था तक मरित्यका  
में जो विकास होता है उसमें बालक के शब्दात्मक  
विकास का नियंत्रण होता है।

(vii.) संवेगात्मक विकास → बालकों के व्यवहार में संवेग  
का महत्वपूर्ण स्थान है। संवेगों के छारण व्यक्ति  
उभी- उभी इतना प्रेरित हो जाते हैं ताकि वह- वह दो  
करने के लिए प्रेरित हो जाते हैं। आयु वृद्धि प  
उसके मुख्यहृष्ट और हृसी से उसके भव्य की  
अनुभूति होती है। जब वयस्ते 1 साल के होते हैं तो  
विभिन्न प्रकार के संवेगों के समझने लगते हैं जो  
भय, क्रोध, धूम, प्रसन्नता, इच्छा, विश्वासा आदि।

(viii.) संश्लानात्मक अंदर का मानसिक विकास का बाल के मानसि  
क संश्लानात्मक, के अन्तर्गत उसकी समस्य मानसिक व्यवहा  
ओं और शारीरिक सम्पर्क होती है। वयस्ता जानूनिकूपा का  
उपयोग करना, शुख कर होता है। अपनी चोरी और  
कुछ व्यापरण, के विषय में अधिक से अधिक चान  
करी जानने की विश्वासा भी वहाँ बहुत ज़्यादा है।

(ix.) सामाजिक विकास का जन्म के अवस्था शिशु उव्यवहा  
सामाजिकता से काफी दूर होता है। वह अत्यधिक  
व्याधी होता है। उसे उपलब्ध अपनी शारीरिक  
आवश्यकता की पूर्ति की ली जानी रहती है। वयस्ते  
में सामाजिक के विकास के पृथम चरण में के अपनी  
आवश्यकता जो की पूर्ति के ग्रोड व्यक्तियों के साथ  
ही जहाँ होता है। लगभग 13वें माह से लेकर 18वें माह  
के वय शिशु का व्यावहार अपने वाले साथियों की  
और उन्मुख द्वारा जाता है। अप्य रिवलोनों के तिए  
लड़ना कुम द्वारा जाता है और मिल्लेजुल के खेलने  
की जावना जो जाती है।

## \* वर्चे की प्रगति के विभिन्न संकेतक एवं मानकः-

⇒ वर्चों की एक निश्चिह्न त्रैम होता है और यह कम शारीरिक तथा जानात्मक विकास होने में लागू होता है। ऐसे वर्चे पहले कहना सीखते हैं। फिर रुकड़ा होना फिर चलना, इसी प्रकार जानात्मक विकास ऐसे पहले गणित के अंडे पहचानेगा। फिर जोड़ घटावेगा। त्रुपरान्ते गुणा सीख पायेगा। वर्चों की प्रगति के विभिन्न संकेतक एवं मानक शारीरिक विकास

3-4 वर्ष → चलना, कहना, सीधी लाइन पर चलना, बिना उसी मदद से चलना

4-5 वर्ष → एवं छुपड़े पहनता, त्रयार होना, नियमों के अनुसार खेल खेलना, आड़तियाँ बनाना

5-6 वर्ष → उलटा चलना, छुपड़े पर चढ़ना

## आधा विकास

3-4 वर्ष → बातचीत में वाच्यों का प्रयोग, प्रश्नों के उत्तर देने का प्रयत्न

4-5 वर्ष → व्यटना की विस्तृत, से बताने का प्रयत्न, परिचय सव्य देने का प्रयत्न

5-6 वर्ष → राष्ट्र - अष्टार में बृहि धौती - धौती कहानी सुनना, प्रश्नों के उत्तर देने में सफल

## जानात्मक विकास

3-4 वर्ष - इसी की पहचानना, माता-पिता, भाई-बहन की नकल तोलना, अपर-नीचे एवं दूपना तेरना का ज्ञान

4-5 वर्ष - स्वयं का ज्ञान, विभिन्न आड़तियों एवं उनसे मिलते - चुलते बस्तु की पहचान

5-6 वर्ष - दूसरे व्यक्ति के नवरिया को समझना, नाप - तोल समझना।

## सामाजिक एवं सार्वजनिक विकास

3-4 वर्ष - परिवार में सभी के हचानना, सभा धुलवा-मिलना, अपनी उम्र के वर्चों के लेना।

4-5 वर्ष - आसपास के वातावरण में जागरूकता सभी मदद की उमिकाश

5-6 वर्ष - आत्मनिर्भर करने का प्रयास, संवेदी पर नियत्रण का प्रयत्न

जानु द्वी अवधि

(१३) पहले माह

सामाजिक व्यवहार का रूप

बोलक उचित और अन्य व्यवहारों  
अन्तर समझने में समय

(१४) द्वितीय माह

बोलक उचित या आवाज की पहचान  
लगता है। व्यवहार का मुद्रण के  
साथ स्पष्टता

(१५) तीसरे माह

मात्रा की पहचानना। ३.१ से अलग  
होने पर उचित होता।

(१६) चौथे माह

व्यवहार के संदर्भ की अलग-  
पहचानना कर सकते हैं। यु

(१७) पाँचवें माह

उसने भी डॉट - फटकार पर असभी  
युक्तिया करता

(१८) छठे ही सोंपवें माह

परिचित व्यवहार का पहचान करता  
साथ स्पष्टता तथा अपरिचित स

(१९) छठे और तीव्रे  
माह

शब्द का अनुभव करता  
हृसरे की बोली, हाथ - गाह, ज़ोह,  
तथा उसका संचालन भी नहीं  
करते। का प्रयोग

(२०) बारहवें माह

(२१) द्वितीय की अवधि

में बड़ी ही रिक - युक्तिज्ञ होते  
हैं। वास्तविकता का प्रयोग करता  
तथा चीरे - चीरे परिवार का  
सुख साक्षण लक्ष्य बन व्यापक  
का उपासन करता

\* प्रारंभिक वाल्यावस्था शिला में वर्ते की प्रगति से  
संवित्त अभिलेखों का संचारणः -

प्रत्येक वर्षा अपने इनिक जीवन में कई प्रकार की उमाएं करता हैं जो अध्यापक द्वारा सावधानीपूर्वक सम्बन्धित अभिलेखों में दर्शे गया जहाँ हैं और समय-समय पर उसका संचारण उमा द्वारा होता है। शिला विद्यार्थियों के व्यवहार, अध्ययन कार्य, अध्ययन कार्य की गति, विद्यार्थियों के व्यवहार, अध्ययन कार्य, अध्ययन कार्य की गति, विद्यार्थियों के व्यक्तित्व, खेल द्वारा में विद्यार्थियों का संलिप्तता, निर्देशों की दुनिं एवं उसे कार्यान्वयन करने, विद्यार्थियों के शारीरिक व्यवहार, विद्यार्थियों के सामाजिक चार इत्यादि के बारे में सम्बन्धित अभिलेखों के प्रपत्रों का संचारण करते हैं। विद्यालय में प्रेषण कई उमा ओं द्वारा द्वारा होता है, जैसे - प्रार्थना सभा, खेल का समय, आन्तरिक व्यक्तिगत खेल, सामूहिक खेल, गीत, नृत्य, नृत्य, नृत्य, प्रकारिक, विभिन्न, त्योहार, इत्यादि। प्रेषण चार लंबी घोषणा होनी चाहिए। साथ-ही - साथ समय पर वर्ते की पुगारी हैं सम्बन्धित अभिलेखों का संचारण कुला भी आवश्यक है।

खेल के समय चार्ट प्रोफिल:-

वर्षे का नाम -

काला - , लिंग - , फिनाँक + , आयु -

निरीक्षक व्यवहार

प्रैषण (हैं / नहीं)

- 1) क्या वर्षा खेलने में उत्कृष्ट है?
- 2) क्या वर्षा खेलने में इमानदार है?
- 3) क्या वर्षा व्यान द्वारा निकृष्ट है  
सुनता है?
- 4) क्या वर्षा लागू किए जाएँ तो रुचि (खेल)
- 5) क्या वर्षा खेल में सुनिया है?
- 6) वर्षा वर्षा लार्डन में खड़ा होता  
अपनी बाई का इत्यार करता है?

आधा से संविधित अविलीय

विभिन्न स्थितियाँ

प्रैषण आपका मत

- 1) आप शहर कीला हैं, वाम्य सहि  
बोलता हैं
- 2) उच्चारण स्पष्ट, तुलनात्मक
- 3) बोलने में नुटियों
- 4) बोलने की किष्यवस्तु
- 5) लंबन
- 6) बोलने से लिखने की गति
- 7) थार्ड कौर्स सुझाव है तो

प्रारम्भिक वात्याक्षर शिक्षा में वर्षों के  
प्रार्थि के मूल्यांकन के लिए प्रैषण सबसे अचिक  
उपयोग होने वाली विधि है। प्रैषण के रूप समय  
प्रैषण का उद्देश्य यहि निश्चित हो तो उसका  
सही लाभ प्राप्त हुआ जा सकता है। प्रैषण के  
अध्ययन के परिणामों के आधार पर बोलक के  
व्यवहार में क्या उभी है और उस सामान्य  
इतर पर कुस लाभ जा सकता है।

## \* गद्यों की प्रगति ने वर्त रखा विवाहग की भूमिकाओं का अन्तर्संकेत :-

परिवार इड छोटी-सी सामाजिक संस्था है जिसमें रहने वाले बच्चे माता-पिता के अधिकार शामिल हैं। बच्चों तथा उन्हें समन्वित होने के समय में आवाह है। बालक परिवार के प्रत्येक सदस्य से प्रत्येक छोटा प्रवावित होता है तथा अपना व्यक्तित्व का निर्माण करता है। प्राचीन छोटे हो जाते हैं तो बालक की शिक्षा पर वर्त के प्रभाव के अन्तर्गत महत्व पढ़ा गया है। परिवार के विभिन्न शाखाओं का :-

- (1) सीखन का प्रथम स्थान - वर्त वह स्थान है जहाँ बालक अपनी माँ से ले लेना, बोलना, "मैं", और हम में अक्षर लगाना और अपने चारों ओर की वस्तुओं के सरलतम गणों की सीखत है।
- (2) शारीरिक विकास
- (3) संकेतात्मक विकास
- (4) मानसिक विकास
- (5) सामाजिक विकास - परिवार में अन्य सहस्रों के साथ रहने से बालक सामाजिक आदर्शों, परम्पराओं तथा व्यवहारों से परिचित होता है।
- (6) आर्थिक विकास
- (7) उत्कृष्टता का उत्पादन - बालक इस शब्दों के उत्पादन में उत्कृष्ट परिवार का विशेष प्रभाव पहुंचता है। उनी सहस्रों की उपयोग, उत्कृष्टता व शुद्ध गाथा का शुद्ध उत्पादन होता है तो वही भी कैसे गाथा बोलने का विकास होता है।
- (8.) शिक्षीयों और आदर्शों का विकास
- (9.) नीतिकर्ता और व्यवस्था का विकास
- (10.) व्यक्तित्व का विकास
- (11.) व्यावर्यारिकता का विकास
- (12.) व्यावसायिक शिक्षा का विकास
- (13.) सहयोग की शिक्षा का विकास → परिवार की वह स्थान है जहाँ नई परीक्षी नागरिकता का यह पाठ शीखता है, जो कोई भी ग्रन्ति सहयोग के बिना नहीं रह सकती है।

बालक के व्यक्तित्व के विषय में स्कूल की महत्व पूर्ण भूमिका है। 5 वर्ष की आयु तक बालक की समस्याओं सामाजिक अन्तः क्रियाएँ माता-पिता तथा अन्य परिवार के साथ संवेद्ध हैं। 5-6 वर्ष की आयु में व्यवहार स्कूल में प्रवेश करता है तब उसके अन्तः क्रियाएँ प्ररोच्य हो जाती हैं। तथा वहाँ उग्र हो जाती है। स्कूल व्यवहार की अपेक्षा अधिक हो जाती है। स्कूल व्यवहार पर विचार पर निम्न ढंग से प्रश्न उत्पन्न हैं-

- (1) स्वस्य आदतों का निर्माण - वर्षों के लिए शिक्षण वह व्यक्ति है जो आदरणीय और प्रशंसनीय पाठे वाले हैं तथा जिसके अवधार का अनुकरण करना चाहिए। अतः आवश्यक है कि अध्यापकों में प्रशासनात्मीय, आख्या एवं अनुकरणीय गुण और विशेषताएँ होनी चाहिए। अध्यापक, जो अभिवृत्तियों के पुत्र विद्यार्थी अधिक सीढ़ीदराजे वाले होते हैं तथा उनका अनुकरण करते हैं।
- (2) स्कूल द्वारा अनुशासन के बालक मुख्यतः अनुशासन अपने सद्व्यवहारों के अध्यापकों से सीखता है। विचालय का अनुशासन बालक के व्यवहार और अभिवृत्तियों को महत्वपूर्ण ढंग से प्रशासित करता है।

(3) व्यक्तित्व → बालक के व्यक्तित्व विचार पर स्कूल का वह गहरा प्रभाव पड़ता है। वर्षों अपने सहपाठियों तथा छाइयों आदि के व्यवहार से ही उभावित नहीं होता है बल्कि स्कूल के सामान्य वातावरण के वर्षों से भी प्रभावित होता है।

(4) चरित्र निर्माण → परिवार के बद स्कूल का वर्षों के नेतृत्व और चारित्रिक विचार से महत्वपूर्ण है। से प्रभाव पड़ता है। स्कूल के शिक्षक, सहपाठी तथा वातावरण जादि सभी बालक के नेतृत्व विचार में घोगदान करते हैं। स्कूलों में बालकों के नेतृत्व विचार पर उसके साथी समूह का भी महत्वपूर्ण है ग से प्रभाव पड़ता है।

(5) सामाजिक विचार → स्कूल में शिक्षक और बालक के मिल भी बालक के सामाजिक विचार में योगदान देते हैं। स्कूल में बालक के अपनी ओगुतु के अनीक बालकों के साथ बढ़ने तथा सीखने का

अपधर ही नहीं मिलता है एक ऐसे को  
कु सामाजिक अनुभव सुनने और सामाजिक व्यवहा  
रण का अपधर श्री मिलता है।